

आशुषेण (von आशु + सेना) adj. *rasches Geschoss habend* VS. 16, 34.

आशुर्हमन् (आ० + ह० von हि) adj. 1) zu *raschem Lauf angespornt, rasch hineilend*: वीरुपतमभिराशुर्हमन्निवा RV. 1, 116, 2. — 2) *die Renner antreibend*, von Agni: तमोऽशुर्हमा ररिषे स्वश्रुयम् RV. 2, 1, 5. besonders, wo er als Apām-napāt erscheint, 31, 6. 33, 1. 7, 47, 2. TS. 2, 4, 9, 1.

आशुर्हपम् (आ० + ह०) adj. *dessen Renner wiehern*, von den Aḥvina RV. 8, 10, 2.

आशोकुटिन् m. Berg ÇABDAM. im ÇKDR.

1. आशोकिये von अशोक (चतुर्थर्थेषु) gaṇa सख्यादि zu P. 4, 2, 80.

2. आशोकिये metron. von अशोका gaṇa प्रुधादि zu P. 4, 1, 123. Davon f. आशोकिया gaṇa शार्ङ्गरवादि zu 73.

आशौच (von 3. अ + शुचि) n. P. 7, 3, 30. *Unreinheit* (in relig. Sinn): दशाहं शावमाशौचं सपिण्डेषु विधीयते M. 5, 59. 61. 62. 74. 80. 97. JĀś. 3, 18. Verz. d. B. H. No. 1092. fgg. — Vgl. अशौच.

आशुष्य (denom. von आशुष्य) *wunderbar sein* (st. औद्रुत्ये ist wohl आशुष्ये zu lesen) GAṆAR. zu gaṇa काण्डादि (P. 3, 1, 27).

आशुष्य adj. *selten erscheinend, seltsam, wunderbar* P. 6, 1, 147. AK. 1, 1, 7, 19. आशुष्यो वक्ता, आशुष्यो ज्ञाता KATHOP. 2, 7. आशुष्यो ऽयं धर्मः PRAB. 87, 13. आशुष्यो गवां देहे ऽगोपेन P. 2, 2, 14, Sch. तदनु वषुषुः पुष्पमाशुष्यमेघाः RAGH. 16, 87. वेगावतरणादाशुष्यदर्शनः संलहयते मनुष्यलोकाः ÇĀK. 99, 7. आशुष्यम् adv. *selten*: बहुलमासां नैषादुक्तं वृत्तमाशुष्यमिव प्राधान्येन Nir. 2, 24, 11, 2. — n. *seltsame Erscheinung, Wunder* AK. 1, 1, 7, 19, 3, 4, 180. H. 304. सा दृष्ट्वा मद्दृष्ट्याशुष्यं विस्मिता ह्यभवत्तदा N. 12, 72, 23, 13. R. 5, 49, 27. बहून्यदृष्टपूर्वाणि पश्याशुष्यणि BHAG. 11, 6. आशुष्यवत्पश्यति कश्चिदेनम् 2, 29. आशुष्यम् oh *Wunder!* ÇĀK. 71, 19. ÇĀK. ÇĀ. 93, 3. mit यद् dass: आशुष्यं परिपीडितो ऽभिरमते यच्चतकस्तुल्यता KĀT. 7. mit यच्च. यत्र, यदि und folg. potent.: यच्च (oder यत्र) तत्रभवान्वृषलं याज्येदाशुष्यमेतत् P. 3, 3, 150, Sch. आशुष्यं यदि सो ऽधीयीत 151, Sch. 6, 1, 147, Sch. mit blosser fut.: आशुष्यमन्धो नाम पुत्रं द्रुष्यति 1, 1, 151, Sch. superlat.: न चैतदाशुष्यतमं यत्नम् — अयान्तकथं पुत्रं पितरं कर्तुमिच्छसि R. 2, 34, 38. आशुष्यपर्वन् Verz. d. B. H. No. 400. साशुष्यं verwundert, erstaunt VID. 146. VER. 2, 12. साशुष्यम् adv. *mit Verwunderung* Hir. 17, 5. — Das Wort wird von चरु (शुर्) mit आ abgeleitet P. 6, 1, 147.

आशुष्यभूत (आ० + भू०) adj. *eine seltsame Erscheinung bildend, wunderbar*: इमे मणिविचित्राङ्गं पश्य हेममयं मृगम् । आशुष्यभूतम् R. 3, 49, 6. वैदेकीं लहमणं रामं नेत्रैरनिमिषैरिव । आशुष्यभूतं दद्रुः सर्वं ते वनवासिनः ॥ 6, 14. आशुष्यभूतानां कथानाम् 1, 63, 34. यदि प्रकृणामभ्येति जीवन्नेव मृगस्तव । आशुष्यभूतं भवति विस्मयं जनयिष्यति ॥ 3, 49, 26.

आशुष्यमय (von आशुष्य) adj. *wunderbar*: आशुष्यमयेनागमनेन ते KATHĪS. 26, 64. सर्वाशुष्यमय *mit allen möglichen Wundern versehen* (रूप) BHAG. 11, 11.

आशुयोतन n. = आशुयोतन Verz. d. B. H. No. 929. 933.

आशुयोतन (von श्युत् mit आ) n. *das Besprengen, Anspritzen* (medic.) Suçr. 2, 321, 12. 322, 7. 9. 324, 12.

आशुम् (von 2. अशुमन्) adj. *steinern* P. 6, 6, 144, VArt. 2. — Vgl. आशुमन.

आशुमिकि patron. von अशुमक P. 4, 1, 173.

आशुमन (von 2. अशुमन् 1) adj. *steinern* P. 4, 3, 143, Sch. BHATT. 4, 26. — 2) m. ein Bein. Aruṇa's, des Wagenlenkers der Sonne, TRIK. 1, 1, 103. H. Ç. 9.

आशुमन्ये von 2. अशुमन् (चतुर्थर्थेषु) gaṇa संकाशादि zu P. 4, 2, 80.

आशुमभारिके adj. = अशुमभारं (eine Last von Steinen) कर्ति, वृत्ति, आवृत्ति gaṇa वंशादि zu P. 5, 1, 50.

आशुमर्ये adj. von आशुमर्य gaṇa कावादि zu P. 4, 2, 111. °थः कल्पः 4, 3, 105, Sch. Ind. St. 1, 57. 403. WEBER, Lit. 43. 217.

आशुमर्य्य patron. von अशुमर्य gaṇa गर्गादि zu P. 4, 1, 105. N. eines Ritual-Lehrers Āḥv. Çr. 6, 10. Verz. d. B. H. 57. COLEBR. Misc. Ess. I, 328. 343. 347. f. आशुमर्य्या gaṇa शार्ङ्गरवादि zu P. 4, 1, 73.

आशुमरिक (von अशुमरि oder ०री) adj. *am Blasenstein leidend* Suçr. 2, 36, 8.

आशुमायन patron. von अशुमन् gaṇa अश्वादि zu P. 4, 1, 110.

आशुमके adj. von 2. अशुमन् P. 5, 1, 39, Sch. = अशुमनो भारभूतान्करति, वृत्ति, आवृत्ति gaṇa वंशादि zu P. 5, 1, 50.

आशुमेर्ये patron. von अशुमन् gaṇa प्रुधादि zu P. 4, 1, 123.

आशु gaṇa सुवादि zu P. 5, 2, 131. Davon adj. आशुमन्.

आशुपण (von श्री im caus. mit आ) n. *das Ankothen* Nir. 6, 8.

आशुम (von अशु mit आ) m. n. gaṇa अर्थर्चादि zu P. 2, 4, 31. SIDDH. K.

249, a, 3 v. u. TRIK. 3, 5, 10. 1) *Einsiedelei, der Aufenthaltsort der Büsser* TRIK. 3, 3, 292. H. 1001. an. 3, 461. MED. m. 39. M. 6, 7. 11, 78. N. 12, 71.

DAÇ. 2, 7. R. 1, 2, 9. 3, 17. 8, 23. 9, 12. RAGH. 1, 35. 2, 67. MEGH. 1. 99. m. N. 9, 22. 17, 45. DAÇ. 1, 42. R. 2, 54, 23. 3, 1, 2. ÇĀK. 7, 10. 28, 15. 100, 8.

n. pl. Viçv. 11, 10. Am Ende eines adj. comp. f. आ SUND. 2, 24. आशुमपर्वन् heisst der erste Abschnitt im 15ten Buch des MBH. — 2) *ein Stadium im religiösen Leben des Brahmanen*, deren es vier giebt: das

des Brahmakārin oder Schülers, das des Gṛhastha oder Hausvaters, das des Vānaprastha oder Einsiedlers und endlich das des Bhikshu

oder Bettlers, AK. 2, 7, 3. TRIK. H. 808. H. an. MED. वेदानधीत्य वैदे वा वेदे वापि यथाक्रमम् । अविप्लुतब्रह्मचर्यो गृहस्थश्चाशुममावसेत् ॥ M. 3, 2. एवं

गृहस्थमे स्थित्वा विधिवत्स्नातको द्विजः । वने वसेत् नित्यो यथावद्विजितेन्द्रियः ॥ 6, 1. वनेषु तु विहृत्यैवं तृतीयं भागमायुषः । चतुर्थमायुषो भागं त्यक्त्वा सङ्गमरिचरेत् ॥ आशुमादाशुमं गत्वा ऊतकमो जितेन्द्रियः । मि-

त्तावलिपरिश्रातः प्रव्रजन्प्रेत्य वर्धते ॥ 33. 34. ब्रह्मचारी गृहस्थश्च वानप्रस्थो यतिस्तथा । एते गृहस्थप्रभवाश्चत्वारः पृथगाश्रमाः ॥ 87. चतुर्णांमा-

श्रमाणाम् 7, 17. 12, 97. An einigen Stellen des Manu ist nur von drei Stadien die Rede, wobei das des Schülers nicht mitgerechnet wird: त

एव हि त्रयो लोकास्त एव त्रय आश्रमाः 2, 230. यथा वायुं ममाश्रित्य वर्तते सर्वज्ञत्वः । तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्तते सर्व आश्रमाः ॥ यस्मात्त्रयो ऽप्याश्रमिणो ज्ञानेनानेन चान्वक्तुम् । गृहस्थेनैव धार्यते तस्माद्व्येष्टाश्रमो

गृही ॥ 3, 77. 78. — 3, 50. 6, 66. 7, 35. 8, 390. 12, 102. चतुर्णामाश्रमाणां हि गार्हस्थ्ये श्रेष्ठमाश्रमम् । श्राद्धः R. 2, 106, 21. वर्षाश्रमाणां रक्षिता ÇĀK. 63.

16. पाषाण्डाश्रमवर्णानाम् Suçr. 1, 104, 20. आश्रममह्यमाश्रितः RAGH. 8, 14. तथापि गृहिणा मुहूर्तमप्यनाश्रमधर्मिणा न भवितव्यम् PRAB. 97, 4. किं न

वेत्स्याश्रमक्रमम् KATHĪS. 24, 150. Vgl. noch VP. 294. fgg. — MED. m. 39 hat noch die Bedeutung मठ Collegium, Schule. Die Bedeutung Wald

beruht wohl nur auf irriger Auffassung von वानप्रस्थे वने, indem das